मेरे पिता

मेरे पिता का निधन अप्रैल 2025 में हुआ।

तब से एक भी दिन ऐसा नहीं गुज़ा जब उनकी उपस्थिति मेरे मन से न गुज़री हो।

मृत्यु एक आदमी को कमरे से निकाल देती है।

वह उसे बातचीत से नहीं निकालती।

जितना बूढ़ा मैं होता जाता हूँ, उतना ही उनके टुकड़े मुझे अपने भीतर छिपे मिलते हैं।

इशारे। ख़ामोशियाँ। प्रतिक्रियाएं। लोगों को देखने के तरीके।

जो विरासतें मायने रखती हैं वे कभी पैसा नहीं होतीं।

यह पहचान है।

जब मैं जवान था, वे मुझे देखते और कहते कि मैं उनकी पहुँच से परे चीज़ों का भी काबिल हूँ।

मुझे लगता था वे मुझे उकसा रहे हैं।

मुझे लगता था माता-पिता एसी बातें इसलिए कहते हैं क्योंकि माता-पिता को अपने बच्चों के बारे में असंभव पर विश्वास करना ही पड़ता है।

अब मैं समझता हूँ।

वे मेरी तारीफ़ नहीं कर रहे थे।

वे मुझे एक ऐसा विश्वास उधार दे रहे थे जो मैंने अभी अर्जित नहीं किया था।

वे वे सड़कें देखते थे जो मैं नहीं देख पाता था।

वे दरवाज़े जिनके अस्तित्व का मुझे पता नहीं था।

वे संभावनाएं जिन्हें खोजने में मुझे दशक लगने वाले थे।

हम पिता और पुत्र थे।

फिर हम दोस्त बन गए।

उस तरह के दोस्त जो ज़िंदगी, स्त्रियों, जीत, अपमान और सपनों के बारे में ईमानदारी से बात करते हैं।

फिर हम सहकर्मी बन गए।

काम, खून और सामान्य सीमाओं को स्वीकार करने से ज़िद्द इनकार से जुड़े साज़िशकर्ता।

सबसे बड़कर, हम एक उपनाम साझा करते थे।

एक उपनाम जो अब जीवित है, इसलिए नहीं कि वह दस्तावेज़ों में लिखा है, बल्कि इसलिए कि वह कथा में प्रवेश कर गया।

वह स्मृति में प्रवेश कर गया।

वह GilletteNarrative में प्रवेश कर गया।

कभी-कभी मुझे यह अजीब एहसास होता है कि वे अब भी देख रहे हैं।

जज की तरह नहीं।

आलोचक की तरह नहीं।

उस आदमी की तरह नहीं जो कहता है:

“मैंने तुम्हें चेताया था।”

नहीं।

बल्कि एक मौन दर्शक की तरह जो उस प्रयोग को देख रहा है जिसे बनाने में उसने मदद की।

एक बेटा जिसने कभी निर्देश-पुस्तिका का पालन नहीं किया।

एक बेटा जो बार-बार साँचे से बाहर निकला।

एक बेटा जिसके जीवन ने एसे परिणाम दिए जिनकी कोई भी उचित रूप से भविष्यवाणी नहीं कर सकता था।

मुझे उनकी कमी महसूस होती है।

उनकी मुस्कुराहट की।

उनके ठहरावों की।

उनकी ख़ामोशी की।

उनके फ़ैसलों की।

स्मृति में संरक्षित उन छोटे-छोटे चित्रों की जिन्हें कोई अभिलेखागार सहेज नहीं सकता और कोई तकनीक वापस नहीं ला सकती।

वे सत्ताईस साल की उम्र में इतालवी सेना में केप्टन थे।

पर वह पद उन्हें कभी समझा नहीं पाया।

जो उन्हें अनोखा बनाता था वह ज्यादा सादा था।

वे मेरे पिता थे।

मेरे अस्तित्व का मौन हिस्सा जबकि बाकी दुनिया शोर मचाने की होड़ में लगी थी।

और फिर, मैं उन्हें लिखूंगा।

जहाँ भी वे हों।

मेरा इंतज़ार करना।

पर अभी नहीं।

अभी काम बाकी है।

अभी सुलझाए जाने वाले रहस्य बाकी हैं।

अभी ऐसी कहानियाँ हैं जिन्हें लिखा जाना ज़रूरी है।

एक दिन मैं पहुँच जाऐंगा।

और जब मैं पहुँचूंगा, हम साथ हंसेंगे।

सफलता पर नहीं।

असफलता पर नहीं।

यात्रा की बेतुकापन पर।

क्योंकि जिया हुआ अनुभव वह कहानियाँ सुनाना जानता है जिनकी कल्पना कभी बराबरी नहीं कर पाएगी।

अलविदा, पापा।

फ़िलहाल के लिए।

तुम्हारा बेटा,

फेर्दिनान्दो

Ferdinando Frega — gillettenarrative.com